

## **पाठ 5: अंधकार में चमकते प्रकाश की तरह शास्त्र गीत: सदा आनन्दित रहो - 1 थिस्सलुनीकियों 5:16–18; फिलिप्पियों 4:6**

### **क. परमेश्वर के साथ सहयोग करना**

1. फिलिप्पियों 2:12 केवल इस पद्य को पढ़ने से हम कौन-सा गलत निष्कर्ष निकाल सकते हैं?
2. उसी लेखक (प्रेरित पौलुस) की निम्नलिखित प्रेरितिक गवाहियों की तुलना कीजिए। इफिसियों 2:8–9; रोमियों 3:23–24; 5:8
3. फिलिप्पियों 2:13 यह पद्य हमें पद्य 12 में लिखी पौलुस की टिप्पणी को समझने में कैसे सहायता करता है?
4. हमारे लिए यह क्यों अत्यन्त आवश्यक (बहुत ही महत्वपूर्ण) है कि हम परमेश्वर को उसकी शुभ इच्छा के अनुसार हमारे भीतर कार्य करने दें?

### **ख. अंधकारमय संसार में ज्योति बनकर चमकना**

1. फिलिप्पियों 2:14 बिना कुड़कुड़ाए और बिना विवाद किए सब कुछ करना कैसे सम्भव है?
2. फिलिप्पियों 2:15 प्रेरित पौलुस ने फिलिप्पी की संस्कृति को “टेढ़े और हठीले लोग” कहा। आज हमारी संस्कृति का वर्णन परमेश्वर का कोई भविष्यवक्ता किस प्रकार करता?
3. फिलिप्पियों 2:15–16 हमारे भीतर और हमारे द्वारा परमेश्वर का कार्य इस अंधकारमय संसार में हमें ज्योतियों के समान चमकने का कारण कैसे बनता है? (यूहन्ना 8:12; मत्ती 5:14–16 भी देखें)

### **ग. एक जीवित बलिदान**

1. फिलिप्पियों 2:17–18 “जीवित बलिदान के रूप में उंडेले जाने” का क्या अर्थ है? (2 तीमुथियुस 4:6 भी देखें)
2. पवित्रशास्त्र में हमें कहाँ अपने जीवन को परमेश्वर के सामने जीवित बलिदान के रूप में प्रस्तुत करने का आग्रह मिलता है? रोमियों 12:1–2
3. जो व्यक्ति कहता है, “मैं अपना जीवन पूरी तरह परमेश्वर को समर्पित करने से डरता हूँ,” उसे आप क्या परामर्श देंगे?

### **घ. चमकती हुई ज्योतियों के उदाहरण**

1. तीमुथियुस — फिलिप्पियों 2:19–24 प्रेरित पौलुस ने तीमुथियुस के विषय में कौन-से प्रशंसा और प्रोत्साहन के शब्द कहे? (2 तीमुथियुस 1:3–7; 1 तीमुथियुस 4:15–16 भी देखें)
2. इपफ्रुदितुस — फिलिप्पियों 2:25–30 इपफ्रुदितुस के नाम और उसके बारे में पौलुस द्वारा कहे गए प्रशंसा के शब्दों से हम उसके विषय में क्या सीख सकते हैं?
3. आज की चमकती हुई ज्योतियाँ: ऐसा कोई समय साझा करें जब आपने किसी यीशु के अनुयायी के जीवन के द्वारा यीशु की ज्योति को उज्ज्वल रूप से चमकते देखा हो।
4. जब हम किसी सह-मसीही के जीवन में यीशु की ज्योति को चमकते देखते हैं, तब उसे प्रशंसा और प्रोत्साहन के शब्द देना क्यों महत्वपूर्ण है?
5. लगातार स्वयं की जाँच करते रहना—कि क्या हमारे भीतर यीशु की ज्योति उज्ज्वल रूप से चमक रही है—क्यों खतरनाक हो सकता है? इब्रानियों 12:1–2
6. आज के हमारे अध्ययन से आपने कौन-से महत्वपूर्ण पाठ प्राप्त किए हैं?